Saturday

Vijay Kumar Jha.
Asso prof.
Depth in History.
V. S. J College Rajnagar

Degree part I.

Political Condition in Sixth Century B.C

Sixteenth Mahajanpads.

छठी सदी ई० पू० उत्तरी भारत में राजनीतिक रूप से विकेन्द्रीकरण कि प्रवृति चल रहा था। सम्पूर्ण भारत कई छोटे-छोटे राज्यों में बटे थे जिसे जनपद कहा जाता था। क्रमशः इन जनपदों कि संख्या कम होने लगी और उसका स्थान महाजनपद लेने लगा। ऐसी कोई सत्ता नहीं थी जो इन समस्त राज्यों को एक राजनीतिक सूत्र में बांध सके। गौतम बुद्ध से पूर्व उत्तरी भारत में सोलह महाजनपदों की सूची प्राप्त हुई है। बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में सोलह महाजनपदों कि चर्चा है — अंग, बंग, मगध, काशी, कोशल, वत्स, वज्जि, मल्ल, चेदि, कुरु, पांचाल, मत्स्य, सूरसेन, अश्मक, अवन्ति, गान्धार, कम्बोज है। इन महाजनपदों में वज्जि और मल्ल गणतंत्र हैं और शेष राजतंत्र। इन सोलह महाजनपदों का उल्लेख जोड़े में किया गया है — अंग-मगध, काशी-कोशल, वज्जि-मल्ल, चेदि-वत्स, कुरु पंचाल, मत्स्य-सूरसेन, अश्मक-अवन्ति, गान्धार-कम्बोज। इन सोलह महाजनपदों कि शासन व्यवस्था एक सी नहीं थी। इन राज्यों के संविधान कुछ का एकतंत्रीय थी तो कुछ का गणतंत्रीय।

इस समय इन महाजनपदों में तीन तरह के शासन व्यवस्था थी — (1) राजतंत्र। जिसमें शासनाध्यक्ष राजा होते थे। अंग, मगध, काशी, कोशल, चेदि, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्स्य, सूरसेन, अश्मक, अवन्ति, गान्धार, कम्बोज में राजतंत्रीय व्यवस्था थी।

(2) कुलीनतंत्र — इस प्रकार कि शासन व्यवस्था में सम्पूर्ण शासन संचालन सम्पूर्ण प्रजा द्वारा न होकर किसी कुल विशेष के व्यक्तियों द्वारा किया जाता था, कपिलवस्तु के शाक्य, पावा के मल्ल, और कुशीनगर के गणराज्य

Sunday 09
JUNE
Mo Tu We Th Fr Sa
3 4 5 6 7 8
10 11 12 13 14 15
17 18 19 20 21 22
24 25 26 27 28 29
Scanned with Cam

शामिल है

(3) गणतंत्र एवं शासन प्रणाली की खोज 1903 में रिज डेविड्स ने भारत में गणराज्यों की खोज की। बौद्ध साहित्य में गणराज्यों का उल्लेख मिलता है। इसमें प्रत्येक गांव के सरदार को राजा कहा जाता था और राज्य के सामूहिक कार्य का विचार एवं परिक्षण करता था।

सोलह महाजनपदों में चार प्रमुख राज्य थे मगध में हर्यंक वंश, कोशल में इक्ष्वाकु वंश, कौशाम्बी में पौरव वंश, अवन्ति में प्रद्योत वंश। गणराज्यों में मिथिला के वज्जि, वैशाली के लिच्छवि, कपिलवस्तु के शाक्य, पावा के मल्ल। बौद्ध ग्रंथों में गणराज्यों के नाम निम्न दिया गया है। (1) कपिलवस्तु के शाक्य, (2) रामग्राम के कोलिय, (3) मिथिला के विदेह, (4) पिप्पलीवन के मोरिय, (5) सुंसुमार पर्वत के भग्ग, (6) अलकप्प के बुलि, (7) केसपुत्र के कलाम, (8) वैशाली के लिच्छवि है।

कपिलवस्तु के शाक्य की राजधानी कपिलवस्तु थी यहाँ के लोग इक्ष्वाकुवंशीय कहते है। रामग्राम के कोलिय गणराज्य पूर्व में स्थित है। बुद्ध की पत्नी यशोधरा यहां की राजकुमारी थी। पिप्पलीवन के मोरिय गणराज्य के लोग अपने को मोरिय कहते थे क्योंकि यहां मयूर बोलना होता था। चन्द्रगुप्त मौर्य इसी गणराज्य में रहते थे और मोरिय से उसका नाम मौर्य पड़ा था। पावा के दो राजधानियां थी मल्ल और कुशीनगर कनिंघम का मत है कि गोरखपुर जिले के आधुनिक पडरौना में उनका राज्य था। पावा में महावीर स्वामी की मृत्यु हुई थी। कुशीनगर के मल्ल यह वर्तमान कसिया को कहते है यहां गौतम बुद्ध की मृत्यु हुई थी। अलकप्प के बुलि बिहार के आधुनिक शाहाबाद और मुजफ्फरपुर के बीच स्थित है। लिच्छवि के राजधानी वैशाली थी। मगध सम्राट अजातशत्रु ने इस गणतंत्र को नष्ट करके मगध में मिला लिया। लिच्छवियों की राजधानी वैशाली तत्कालीन पूर्वी भारत का प्रमुख नगर था। यहाँ के प्रत्येक मानव को राजा कहता था। मिथिला के विदेह बिहार के आधुनिक दरभंगा मधुबनी और भागलपुर जिले में आता है। यह शक्तिशाली गणराज्य जिसकी राजधानी जनकपुर थी। यहां जनक का राज्य था।

Scanned with Cam

2019

संसुमार पर्वत के भग्ग यह गणराज्य उत्तर प्रदेश में स्थित था इसकी राजधानी चुनार थी। केसपुत्त के कलाम यह कौशल देश के पश्चिम में स्थित था। बुद्ध के गुरु आलार कलाम इसी जनपद के थे।

Tuesday

राजतंत्रिय राज्य –

(1) अंग – बिहार के मुंगेर और भागलपुर जिले में स्थित था इसकी राजधानी चम्पा थी। मगध के शक्ति उत्थान के बाद अंग मगध में मिला लिया गया।

(2) मगध – यह बिहार के पटना और गया जिला में स्थित था इसकी राजधानी गिरिब्रज थी यहाँ बिम्बसार का राज्य था जो हर्यंग वंश के थे।

(3) काशी – इसकी राजधानी ~~काशी थी~~ वाराणसी थी यहा पार्श्वनाथ के पिता अश्वसेन राजा थे बिम्बसार के पुत्र अजातशत्रु ने काशी पर अधिकार कर लिया।

(4) कोशल – यह पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित था राजधानी श्रावस्ती थी काशी और कोशल में संघर्ष होता था यहाँ के राजा प्रसेनजीत थे।

(5) चेदि – यह यमुना नदी के दक्षिण बुन्देलखण्ड तथा मालवा में स्थित था राजधानी शक्तिमती थी। शिशुपाल यहाँ का राजा था।

(6) वत्स – यह आधुनिक इलाहाबाद क्षेत्र में स्थित था इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। यहाँ के राजा उदयन थे इस राज्य में 300 संघ थे।

(7) कुरु – यह आधुनिक मेरठ तथा हरियाणा प्रदेश में स्थित था इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी। बुद्ध के काल में यह जनपद गणराज्य था।

(8) पांचाल – यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश में था। इसके दो भाग थे प्रथम उत्तर पांचाल राजधानी अहिच्छत्र दूसरा दक्षिण पांचाल राजधानी काम्पिल्य थी।

(9) मत्स्य – यह जयपुर तथा अलवर क्षेत्र में स्थित था इसकी राजधानी विराट थी। यहा महाभारत काल में गणतंत्र था।

(10) सूरसेन – यह यमुना के तट पर स्थित था इसकी राजधानी मथुरा थी। बुद्ध के काल में यहाँ राजतंत्र था।

(11) अवन्ती – यह मालवा के आसपास था उत्तरी अवन्ति राजधानी उज्जैन तथा दक्षिणी अवन्ती राजधानी माहिष्मती थी यहाँ के राजा प्रद्योत वंश के प्रद्योत थे मगध सम्राट शिशुनाग ने अवन्ती को जीत कर मगध में मिला लिया।

(12) अश्मक – यह दक्षिण भारत में गोदावरी के तट पर स्थित था इसकी राजधानी पोतना थी

JUNE 2019
Su Mo Tu We Th Fr Sa
30
2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29

Scanned with CamScanner

यहाँ के राजा इक्ष्वाकु वंश के थे। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार इसका अवन्ति जनपद के साथ संघर्ष चलता था और अन्त में अवन्ति अश्मक पर अधिकार कर अपने राज्य में मिला लिया।

(13) गांधार — यह आधुनिक पेशावर और रावलपिंडी जिले में स्थित था। इसकी राजधानी तक्षशिला थी। यह विद्याध्ययन के केन्द्र था यहाँ एक विश्वविद्यालय था। यहाँ का राजा पुष्कुसाति था। इसका अवन्ति के राजा के साथ युद्ध हुआ था।

(14) कम्बोज — यह गांधार के उत्तर पश्चिम में था आधुनिक राजौरी और हजरा क्षेत्र में स्थित था। इसकी राजधानी राजपुर थी कौटिल्य के काल में यहाँ गणतंत्र स्थापित हुआ।

राजतंत्रीय राज्य में राजा के द्वारा शासन संचालित होते थे। शासन संचालन के लिये राजा सलाहकारी समिति की नियुक्ति किया था। शासन एवं न्याय दोनों कार्य राजा ही सम्पादन करते थे। लोहे के प्रयोग ने जनपदों को और भी शक्तिशाली बना दिया था क्योंकी लोहे के अस्त्र शस्त्र का निर्माण किया जाता था। जनपद का तीन रूप था जन, जनपद तथा महाजनपद। ये शक्ति के आधार पर विकास किया। गणतंत्रीय शासन व्यवस्था विभिन्न संघों के सहयोग से चलता था। जो राज्य राजतंत्र से संचालित नहीं होते थे वहाँ गणतंत्रीय शासन व्यवस्था प्रचलित थी। गणतंत्र में राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन बड़े ही निष्ठा से किया जाता था। राज्याज्ञा तथा राजनियम को कभी भी भंग नहीं किया जाता था। वस्तुतः सुरक्षा प्राप्त करने के लिये गणतंत्रात्मक व्यवस्था कायम किया गया था। गणतंत्र के राजा को निर्वाचित किया जाता था, कुलों के प्रतिनिधि राजा का निर्वाचन करते थे अतः राजा को महासम्मत कहा जाता था। राजा के समस्त शक्ति सामन्तों के हाथ था। राजा सामन्तों के मुखिया मात्र थे, सलाह के लिये परिषद थी तथा शासन के लिये उपराजा, सेनापति तथा कोषाध्यक्ष होते थे।

Scanned with Cam